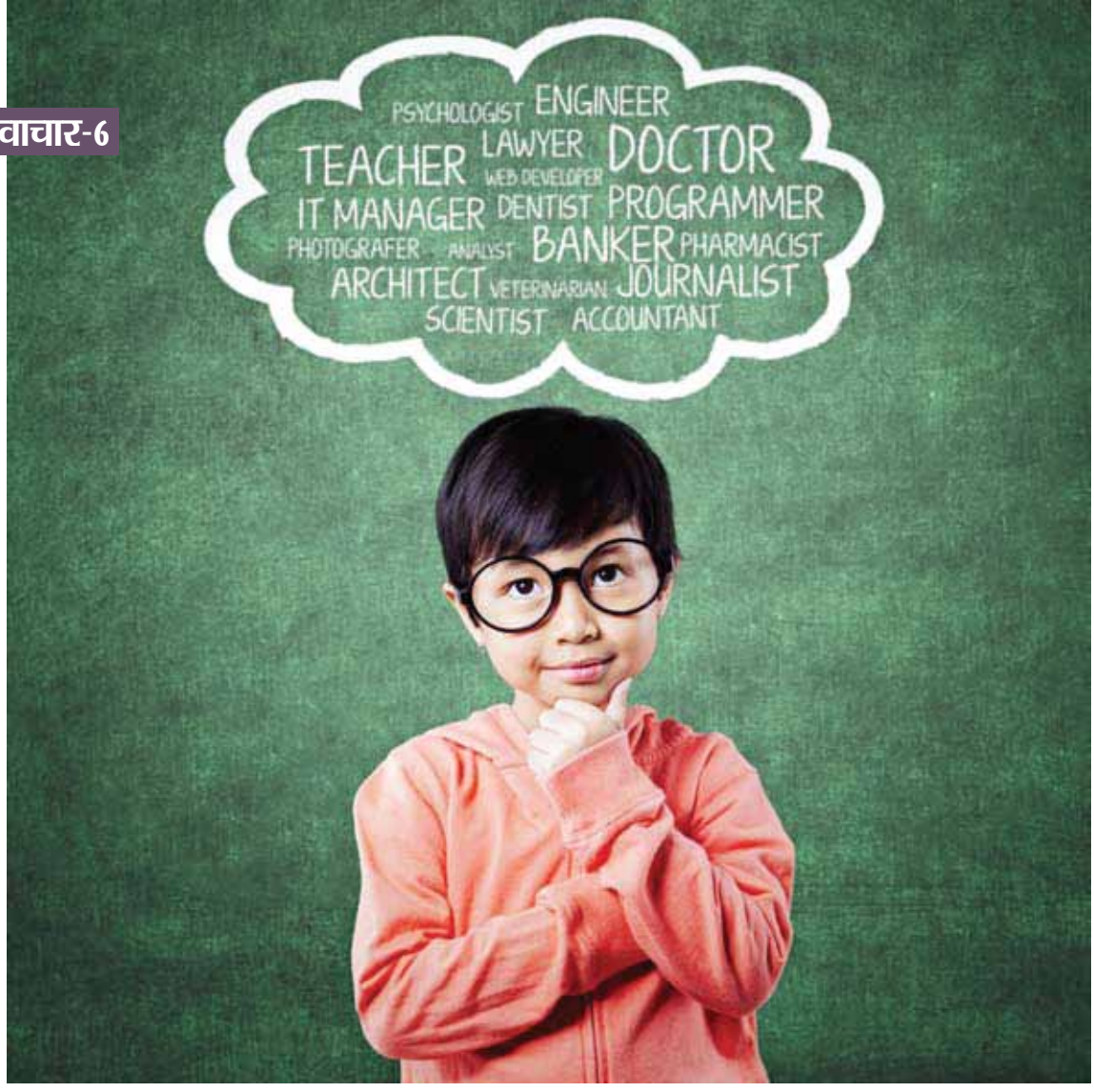

भविष्य सृजन

An aimless life is a miserable life and the quality of your life depends on the quality of your aim.
-Mira Alfassa

प्राथमिक विद्यालय में छात्र कच्ची मिट्टी की तरह होते हैं और मिट्टी को आकार देना शिक्षक का कर्तव्य है। सत्य यही है कि शिक्षकों के सृजन से ही छात्रों का भविष्य संवरता है। शिक्षकों का दायित्व है कि वह छात्र के मस्तिष्क में उसकी रुचि के अनुसार उनमें भविष्य निर्माण के बीज रोपित करें। छात्र जब प्राथमिक शिक्षा पूरी कर ले तो उसके मस्तिष्क में अंकुरित हुए भविष्य निर्माण के बीजों को संवारने का वक्त होता है। यह कार्य छात्रों के भविष्य के साथ राष्ट्र निर्माण के लिये भी परमावश्यक है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्र अपने लक्ष्यों का चयन करने की भूमिका से ही अवगत नहीं होते तथा उन्हें प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं कर पाते। ऐसे में शिक्षक का दायित्व और भी बढ़ जाता है। प्रस्तुत नवाचार इस दिशा में एक सार्थक कदम है।

नवाचारक

मुलायम सिंह, प्रा॰ वि॰ फुफुवार प्रथम, सरसौल कानपुर नगर

नवाचार के क्षेत्र

1. छात्र का लक्ष्य स्पष्ट होना
2. छात्र की मनःस्थिति समझना

किन विद्यालयों में उपयुक्त है : प्रत्येक विद्यालय में लागू किया जा सकता है।

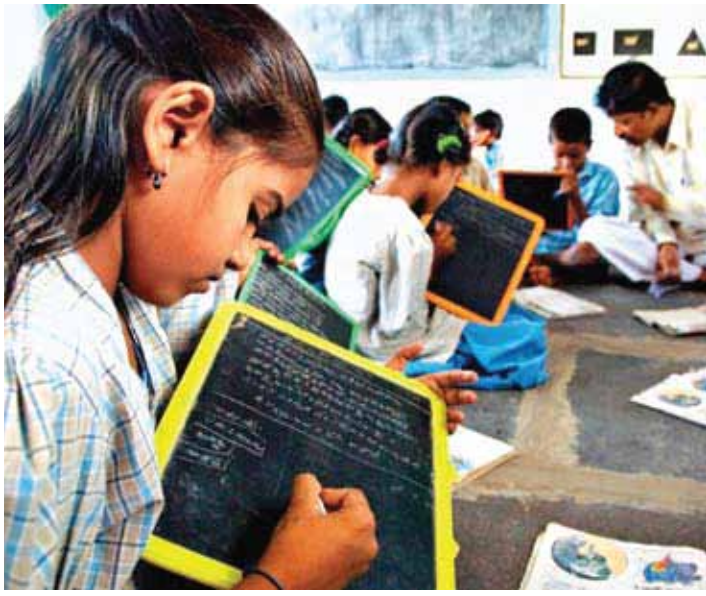

नवाचार का सार

छात्रों को शिक्षा का महत्व समझाते हुए उनके लक्ष्यों को जानना और उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये उन्हें प्रेरित करना। इससे छात्रों में न केवल शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न होती है, अपितु उन्हें विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी भी प्राप्त होती है और वह अपने लक्ष्य का चयन कर आकांक्षा पूर्ति के प्रयासों में प्रयत्न प्रारंभ कर सकते हैं।

क्रियान्वयन : शनिवार को होने वाली बाल-सभा के समय छात्रों को एक-एक करके विभिन्न व्यवसायों/सेवा क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी जाये। यह प्रक्रिया खेल के रूप में होती है, जिससे छात्र अपने विचार और संदेह बिना किसी संकोच के अध्यापक के समक्ष रख सकें। छात्रों से विभिन्न विषयों पर बात कर यह जानने की कोशिश की जाती है कि उनकी रुचि किस क्षेत्र में है। छात्र-छात्राओं से सीधा सवाल पूछा जाता है कि वे क्या बनना चाहते हैं?

इस तरह विभिन्न गतिविधियों में हाथ उठाने वाले छात्रों के नाम प्रोफाइल पर लिख लिये जाते हैं। अध्यापक उनकी क्षमता आदि परख कर इच्छित व्यवसाय (प्रोफेशन) में आगे बढ़ने के लिये मार्गदर्शन करता है और उनसे जुड़े हुए अन्य व्यवसायों के विषय में जानकारी प्रदान करता है। जैसे– नर्स, कंपाउंडर, लैब टैकनीशियन आदि डॉक्टर के प्रोफेशन से जुड़े हुए हैं। यदि कोई छात्र अपने पारिवारिक परिवेश के कारण मजदूर या रिक्शा चालक अथवा मिस्त्री बनने की इच्छा व्यक्त करता है, तो उसका सही मार्गदर्शन करना भी अनिवार्य हो जाता है। ऐसे छात्रों को मार्गदर्शन एवं प्रेरणा की आवश्यकता अन्य छात्रों की तुलना में कहीं अधिक होती है। इस श्रेणी के छात्रों को जीवन निर्वाह के लिये बेहतर विकल्पों के बारे में बताकर उन्हें लक्ष्य प्राप्ति के लिये लालायित किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार छात्रों को विद्यालय में ही विकल्प बताकर उन्हें चिकित्सक, शिक्षक, तकनीशियन, अभियंता,

गतिविधि : यदि आप अध्यापक के बारें मे बताना चाहतें है–

अध्यापक द्वारा प्रश्न	छात्र की प्रतिक्रिया	अध्यापक की प्रतिक्रिया
1.अध्यापक किसे कहते हैं? 2.अध्यापक का क्या कार्य है? 3.अध्यापक का सम्मान कौन-कौन करता है?	छात्र विभिन्न उत्तर देंगे जैसे (अध्यापक का कार्य पढ़ाना है। हम सब अध्यापक का सम्मान करते हैं।) जिससे छात्रों की मनोस्थिति का पता चलेगा।	जो शिक्षण कार्य करे वह अध्यापक है। अध्यापक का कार्य शिक्षा देना है। समाज के सभी लोग अध्यापक का सम्मान करते हैं।
4.आप में से कौन-कौन अध्यापक बनना चाहता है?	कुछ छात्र अपना हाथ उठाते हैं।	शिक्षक छात्रों को अध्यापक के प्रोफेशन के बारे में विस्तार से बताते हैं।
यदि डॉक्टर के बारें में बताना चाहते है–		
1.बीमार होने पर आप क्या करते हैं? 2.डॉक्टर क्या करता है? 3.वह किस प्रकार के वस्त्र पहनता है?	डॉक्टर को दिखाते हैं। हमें दवा देता है। सफेद वस्त्र पहनता है।	डॉक्टर को दिखाते हैं। डॉक्टर हमारा परीक्षण करके आवश्यक दवाओं से इलाज करता है। डॉक्टर का चित्र दिखाया जाता है।
4.आप में से कौन-कौन डॉक्टर बनना चाहता है?	कुछ छात्र अपना हाथ उठाते हैं।	शिक्षक छात्रों को डॉक्टर के प्रोफेशन के बारे में विस्तार से बताते हैं।

समन्वयक, अनुवादक, लेखक, संपादक, शिल्पकार, कला विशेषज्ञ आदि करियर विकल्पों के लिये तैयार किया जा सकता है। अगर प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही छात्र को अपने भविष्य के विकल्पों का ज्ञान होगा तो अध्यापक बेहतर तरीके से उनकी इच्छाओं के बीज रोपित कर सकते हैं। इसी क्रम में आप अपने आसपास के किसी भी व्यवसाय से जुड़े व्यक्ति को विद्यालय में बुलाकर छात्रों से उनका संवाद स्थापित करा सकते हैं। छात्र उनके समक्ष अपनी जिज्ञासा रखकर समाधान तलाश सकते हैं या भ्रांतियां दूर कर सकते हैं। आप कभी किसी चिकित्सक तो कभी किसी अभियंता या अधिकारी को विद्यालय बुलाकर छात्रों से इंटरएक्शन करायेंगे तो उसके दूरगामी परिणाम निकलेंगे। इसी प्रकार छात्रों को अस्पताल, फैक्ट्री, पोस्ट ऑफिस इत्यादि के भ्रमण पर लेकर जाया जा सकता हैं। इसी श्रेणी में आप शिक्षा क्षेत्र के अधिकारियों के जरिये अपने जिलाधिकारी से निवेदन कर सकते हैं कि आपके विद्यालय के छात्रों को कोई संग्रहालय, रेडियो स्टेशन या टेलीविजन केंद्र का भ्रमण कराया जाये। इसी तरह आप छात्रों को स्थानीय समाचार पत्र के कार्यालय में भ्रमण के लिये ले जा सकते हैं, जिसके लिये आप समाचार पत्र के संपादक या जिला सूचना अधिकारी की सहायता अपने शिक्षा अधिकारियों के माध्यम से ले सकते हैं।

उदाहरण–

1. यदि विद्यालय में किसी को चोट लगे तो डॉक्टर बनने के इच्छुक छात्र से दूसरे छात्र को दवाई लगाने और पट्टी करने आदि का अवसर दिया जा सकता है। स्मरण रहे कि यह कार्य अध्यापक की देख-रेख में हो और अध्यापक कक्षाओं में प्राथमिक चिकित्सा के विषय में आवश्यक जानकारी प्रदान करें।
2. अध्यापक बनने के इच्छुक छात्रों को विद्यालय में शिक्षण करने का मौका दिया जा सकता है।

लाभप्रद क्षेत्र

प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर अगर छात्रों के लक्ष्य स्पष्ट हो जाते हैं तो वह उसे पाने के पथ पर आगे बढ़ने लगते हैं। लक्ष्य की जानकारी के बाद अध्यापकों को भी छात्रों के शिक्षण में आसानी होती है। इस नवाचार के क्रियान्वयन के उपरान्त निम्नलिखित लाभ देखे गये।

1. विद्यालय सुचारू रूप से चल रहा है।
2. मनोरंजन के साथ शिक्षा प्राप्त हो रही है।
3. छात्र को उसका लक्ष्य स्पष्ट हो रहा है तथा वह भविष्य के लिये तैयार हो रहा है।
4. छात्र-शिक्षक-समुदाय (अभिभावक) में रिश्ता मजबूत होता है।
5. छात्र में नैतिक तथा चारित्रिक गुणों का विकास होता है।
6. छात्र को अपना स्वप्न साकार करने का अवसर मिलता है। ■